जल का महत्त्व

सुरेश चंद्र ''सर्वहारा''

जल का महत्त्व

जल तो है आधार जीव का
इसको व्यर्थ न खोएँ,
बूँद-बूँद उपयोगी जल की
इसको सहज सँजोएँ।
पीने लायक जल धरती पर
बहुत अधिक है सीमित,
उसको भी यदि किया प्रदूषित
तो होंगे संतापित।
जल से जीवन का रहता है
हर पल का ही नाता,
इसीलिए तो कहते आए
हम नदियों को माता।
लेकिन हमने जल प्रदूषित कर
विपदा को ही पाला,
कूड़ा-कचरा और मल-मूत्र
जल स्रोतों में डाला।
उद्योगों के तत्व विषैले
हरते जल-निर्मलता,
नव विकास के नाम मनुज अब
अपने को ही छलता।
आबादी बढ़ती जल घटता
कैसा संकट भारी,
जल पाने को मची हुई है
पग-पग मारा मारी।
कल को आने वाली पीढ़ी
रहे न जल से वंचित,
है आवश्यक आज करें हम
वर्षा जल को संचित।
हो भू के जल का संरक्षण
और वनों का वर्धन,
रहते समय करें हम सब मिल
जल का उचित प्रबंधन।
बाद हवा के जल ही होता
सर्वाधिक आवश्यक,
जल है तो कल है यह कहना
समझें नहीं निरर्थक।
अतः मोल जल का पहचानें
करें न निर्मम दोहन,
है अनमोल देन कुदरत की
हमको जल संसाधन

नदी

छोड़ कर पीछे
रेत के ढेर
और
रूखे सूखे किनारे
नदी तो खुद ही
न जाने कहां बह गई।
दिखते हैं अब
मरे हुए घोंघे
तटों पर बैठे
उकताए हुए बगुले,
मछली कछुओं की तो
बस याद बाकी रह गई।
कितना किया
हमने प्रदूषण,
जल-वस्त्रों का
नित चीर हरण,
रही देखती
कुछ ना बोली
क्यों नदी
चुपचाप ही सब सह गई।
निर्मित कर
सभ्यताएं
हो गई है खण्डहर,
पोषित कर
सन्तान को
शुष्क हुआ अंग हर,
वन्दनीय
नदी हमारी
थक हारकर
पता नहीं कब ढह गई।

वर्षा (दोहे)

वर्षा जीवन दायिनी, धरती का आधार।
बिन इसके संभव नहीं, जीवन के व्यापार।।

वर्षा आती देखकर, सभी मानते हर्ष।
इसमें ही तो छुप रहा, जीवन का उत्कर्ष।।

खेतों में फसलें उगे, खिलते हैं खलिहान।
वर्षा करती कृषक को, जीवन नया प्रदान।।

वर्षा से जंगल बने, वर्षा से ही जीव।
पारिस्थितिक तंत्र की, वर्षा ही है नींव।।

वर्षा की हर बूंद का, समझें आज महत्व।
जिससे कल को भी बचे, यह जीवन का तत्व।।

वर्षा की जलधारा को, नहीं बहाएं व्यर्थ।
यदि चेते ना समय पर, होगा बड़ा अनर्थ।।

वर्षा की सुखदायिनी, बूंद-बूंद अनमोल।
इसे सहेजें यत्न से, समझ सुधा के तोल।।

वर्षा

मेघ उठे हैं नभ में देखो
कितने काले-काले,
इन्हें देखकर दुबक गए हैं
जाने कहां उजाले।
संग हवा के बहते जाते
रूप बदलते पल-पल,
एक जगह ना रहते बैठे
ये हैं बालक चंचल।
गड़गड़ गड़गड़ गरज उठे अब
बड़े जोर से बादल,
खटकाते हैं नटखट बच्चे
लगातार ज्यों साँकल।
यहां वहां भी बीच-बीच में
चमके बिजली कड़कड़,
आतिशबाजी की जैसे तो
फूट पड़ी लम्बी लड़।
रिमझिम रिमझिम बरसा पानी
भीगी धरती सारी,
पेड़ नहाए पौधे भीगे
झूम उठी फुलवारी।
लो फूटी है किरण धूप की
लुकती छुपती क्षण-क्षण,
चमक उठे हैं हरी घास पर
मोती जैसे जल-कण।
लगा निकलने इन्द्रधनुष भी
छटा अनोखी छाई,
निखर गया है रूप धरा का
जबसे वर्षा आई।

संपर्क करें:
सुरेश चंद्र ''सर्वहारा''
3फ22 विज्ञान नगर,
कोटा-324 005 (राज.)
मो. 09928539446